सम्पादकीय / Editorial
विज्ञान संवाद की भाषा हिन्दी : अनन्त संभावनाएं

https://doie.org/10.0524/VP.2024813799

जन संवाद की हिन्दी

हिंदी जन संवाद की भाषा के रूप में विकसित हुई। हिंदी के कारण आजादी के लिए एकजुट संघर्ष करने की शक्ति पैदा हुई। महात्मा गांधी ने हिंदी को समावेशी भाषा के रूप में इस्तेमाल किया और भारत की जनता को संवाद करते हुए मिलकर संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण सभी क्षेत्र के लोगों के बीच हिंदी संवाद का सरल साधन बनी। स्वतंत्रता के बाद हिंदी को राजभाषा हिंदी के रूप में संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी को घोषित किया गया। अनुच्छेद 351 के अनुसार हिंदी भाषा का प्रचार प्रसार, बढ़ाने और विकास संघ का कर्तव्य है।

अंग्रेजी से अभिशप्त हिन्दी

अंग्रेजी के माध्यम से विज्ञान शिक्षा देने से अपार हानि होती है, अंग्रेजी भाषा पर अधिकार करने में ही हमारी अधिकांश मानसिक शक्ति खर्च हो जाए, यह बहुत ही अवांछनीय है।

आज भारत में हम रट–पिट कर औसत–बुद्धि वाले इंजीनियर और डॉक्टर तो पैदा कर रहे हैं, लेकिन खोजकर्ता वैज्ञानिक, मौलिक चिंतक और दार्शनिक नहीं पैदा कर पा रहे हैं. भारत की ज्यादातर आबादी नवीनतम ज्ञान–विज्ञान तक पहुंच से वंचित है। जिसकी मौलिक रचनात्मकता बची हुई है, उसे आत्मविश्वास के साथ सामाजिक संस्कृति के सब तत्वों की वैज्ञानिक अभिव्यक्ति करने का प्रयास करना होगा।

भारतीय भाषाएं

भारत की 22 भाषाओं को संविधान की अनुसूची 8 में मान्यता दी गई है। ये हैं : हिंदी, पंजाबी, उर्दू, कश्मीरी, संस्कृत, असमिया, ओड़िआ, बांग्ला, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलुगू, मलयालम, कन्नड़, मणिपुरी, कोंकणी, नेपाली, संथाली, मैथिली, बोडो, डोगरी।

अनुसूची 8 में हिन्दी को रखना औचित्यपूर्ण नहीं है। यह हिंदी सरकारी खड़ी बोली रह गई है। राष्ट्रभाषा हिन्दी के समावेशी स्वरूप की परिकल्पना के सर्वथा विपरीत है। अपेक्षा है कि भारत सरकार का गृह मंत्रालय आवश्यक कार्यवाही करे। हिन्दी के सरकारी पुरस्कार भी समावेशी हिंदी के लिए हों।

सभी भारतीय भाषाओं की वर्णमाला कमोबेश संस्कृत की वर्णमाला के अनुसार है। वर्ण क्रम समानता के साथ लिपि भेद है। कुछ स्थानिक उच्चारणों का समावेश है। भारतीय भाषाओं की मणिकार्णिकाएं संस्कृत के धागे में पिरोई हुई हैं। इनका सामूहिक स्वरूप सुमेरु मनका समावेशी हिन्दी है।

इन क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं में परंपरागत ज्ञान और संस्कृति का बोध है। संस्कृति का तात्पर्य है व्यक्ति, समाज, पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए संगीत, साहित्य, नृत्य, कला के रूप में रचनात्मकता की अभिव्यक्ति। एक ही समय अवधि में आगे पीछे उत्सव मनाए जाते हैं, नाम अलग अलग हैं।

विज्ञान साहित्य की हिन्दी

आधुनिक विज्ञान को अपनी भाषा में अभिव्यक्त करने के लिए पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता है;

और उनके प्रयोग संवर्धन को बढ़ावा देने के लिए समयबद्ध प्रयास करने की आवश्यकता है।

अपनी बात हिंदी तक की सीमित रखें तो हिन्दी के साहित्य पक्ष के साथ साहित्येतर विज्ञान पक्ष भी स्थानिक पारंपरिक भाषिकता से जुड़कर विकसित हो। नवीनता, नवाचार, प्रौद्योगिक प्रयोग पर बल दिया जाए।

सरकार बड़े गौरव के साथ कहती है कि भारत में शोध पत्रों का प्रकाशन विश्व स्तर पर तीसरे स्थान पर है। लेकिन कितने शोध पत्र हैं जो साधारण लोगों को उद्यमिता की तरफ बढ़ने में और श्रेष्ठता पाने में सहायक हो सकते हैं। शायद 1–2 प्रतिशत ही। विचारणीय विषय है। क्या करें ?

निज भाषा उन्नति को मूल

जापान में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सलाहकार के रूप में काम करने का अवसर मिला और उस दौरान समझ में आया कि जापान की विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में नवाचारमय उन्नति का कारण जापानी मातृभाषा में शिक्षा के द्वारा जन जागृति रहा। उनके हर काम में नयापन दिखाई देता है। जापानियों को अपनी भाषा और संस्कृति पर गर्व है। जापानी मातृभाषा में शिक्षा के कारण जापान के जनजीवन में उत्कर्ष की हिलोरें उठ रही हैं, और दुनिया जापानियों का काम अचरज भरी दृष्टि से देख रही है।

भारत में विदेशी भाषा अंग्रेजी के माध्यम से शिक्षा होने के कारण अधिकांश मानसिक शक्ति खर्च होती है। आज हम रट कर औसत बुद्धि वाले इंजीनियर और डॉक्टर तो पैदा कर रहे हैं, लेकिन खोजकर्ता वैज्ञानिक, मौलिक चिंतनकर्ता और दार्शनिक नहीं पैदा कर पा रहे। भारत की अधिकांश आबादी नवीनतम विज्ञान प्रौद्योगिकी को समझकर नए उद्यम, उद्योग शुरू करने में हिचकिचाहट महसूस करती है।

जो किसी विदेशी भाषा के दम पर एक अन्यायपूर्ण सत्ता–संरचना में हर जगह छाए हुए हैं, उनकी मौलिकता नष्ट हो चुकी है.। हमारी पूरी की पूरी पीढ़ी नकलची बन रही है। आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है।

भारत में वैज्ञानिकता अतीत में, स्वतंत्रता के पहले और बाद में

भारत में वैज्ञानिकता सभी विज्ञान मनीषियों में है, अतीत में, स्वतंत्रता के पहले और बाद में भी। पाणिनी, अगस्त्य, भास्कराचार्य, आर्यभट्ट, कणाद, गौतम, जैमिनी, आदि अनेक वैज्ञानिकों के उल्लेखनीय योगदान से सभी परिचित हैं। आक्रांताओं ने नवाचार प्रवृत्ति एवं प्रगति को मंद किया, और प्रतिबंधित किया।

ब्रिटिश काल की दासता में भी आधुनिक विज्ञान शोध में सी वी रमन और विश्वेश्वरैया के योगदान उल्लेखनीय हैं। लिस्ट बहुत लंबी है। कुछ प्रमुख वैज्ञानिक इस प्रकार हैं – आत्माराम, जगदीश चन्द्र बोस, हरगोबिंद खुराना, आचार्य प्रफुलचन्द्र राय, शांतिस्वरूप भटनागर, अब्दुल कलाम, होमी जहांगीर भाभा, सतीश धवन, हरीश चन्द्र, दौलत सिंह कोठारी, विक्रम साराभाई, मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया, सी वी रमन, इत्यादि।

रामानुजन जैसे गुदड़ी के लाल भी हुए। बहुतेरे पहचाने नहीं गए। जयंत नार्लीकर, एच सी वर्मा, गोरख प्रसाद, सत्यप्रकाश आदि मूर्धन्य वैज्ञानिकों ने हिन्दी में भी लिखा।

जन भाषा हिन्दी में विज्ञान प्रसार

विज्ञान प्रसार, उद्यमिता और आविष्कार की प्रवृत्ति के विकास के संदर्भ में कई संस्थाएं काम कर रही हैं। डा. रघुवीर ने हिन्दी में पारिभाषिक विज्ञान शब्दावली निर्माण के सिद्धांत पर लिखा।

कुछ प्रमुख विज्ञान प्रसार संस्थाएं हैं –

विज्ञान परिषद प्रयाग, प्रयागराज, लोक विज्ञान परिषद दिल्ली, एकलव्य भोपाल, आईसेक्ट भोपाल, हिंदी प्रकाशन कक्ष, BHU, वाराणसी, CSIR NISPAR निस्पर, नई दिल्ली, विज्ञान प्रसार (DST), नोएडा, होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केन्द्र (TIFR), मुंबई, हिंदी विज्ञान साहित्य परिषद, (BARC), मुंबई, मराठी विज्ञान परिषद (मराठी में), मुंबई, इत्यादि ।

मेरा मंतव्य है वैज्ञानिक स्वयं अनुसंधान के माध्यम से जनसाधारण हित में अविष्कार करें और प्रसार करें। भारत सरकार शोधपरक बौद्धिक संपदा संरक्षण की दिशा में पेटेंट आदि के लिए नए प्रोत्साहन दे रही है। इसके लिए आवश्यक है उनके शोध पत्रों का प्रकाशन गुणवत्ता के लिए मान्यता प्राप्त विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के रिसर्च जनरल में होता रहे। इससे उन्हें हमेशा प्रोत्साहन मिलेगा और इसके लिए उचित सम्मान भी। अभी अधिकांश शोध पत्र अंग्रेजी में प्रकाशित होते हैं, हिन्दी में अति अल्प।

एक कड़वा सत्य भी है कि देश की हिन्दी संस्थाएं ललित साहित्य तक ही सीमित हैं। साहित्येतर विज्ञान साहित्य में शोध परक जर्नल प्रकाशन को पहचानते भी नहीं। अभी तक ऐसे किसी उदाहरण का पता नहीं है जिसमें हिन्दी में विज्ञान शोध परक रिसर्च जर्नल को सम्मान मिले। इस संबंध में UGC कोई नीति बनाए।

अनुसृजन में तकनीकी सहाय

आज टेक्नोलॉजी ने हिन्दी में लेखन को कुछ आसान किया है। मशीनी अनुवाद से लगभग 70% से 80% आसानी हो जाती है। इस ड्राफ्ट को सुधार कर सुबोध एवं संप्रेषणीय बनाना संभव है। यह कार्य भी श्रम साध्य है। इसे अनुसृजनिका (Transcreation work bench) के माध्यम से बहुत आसान बनाया जा सकता है। अनुसृजनिका में मशीनी अनुवाद सुविधा, ग्रामर चेक, स्पैल चेक, समांतर कोश, तकनीकी शब्द कोश, उत्कृष्ट लेखों के नमूने, आदि सुविधाएं हों।

अनुवाद लेखक–उन्मुखी है, इसमें लेखक की रचना धर्मिता, परिवेश, और उदाहरण को बनाए रखकर भाषांतर करते हैं। जबकि अनुसृजन पाठक–उन्मुखी है। इसमें पाठक के अनुकूल सुबोध, संप्रेषणीय भाषांतर करते हैं। इसमें अनुसृजनकर्ता की रचनात्मकता, शैली प्रधान होती है।

गोस्वामी तुलसीदास ने श्री रामचरितमानस की रचना में मूल कथानक बाल्मीकि रामायण से लिया। अवधी भाषा प्रधान समावेशी हिंदी भाषा में लिखा। उपनिषद आदि से ज्ञान माणिक्य जोड़े। ज्योतिष के अनुसार कालबोध भी कराया। इसे अनुसृजन की कोटि में उत्कृष्ट रचना कह सकते हैं।

हिंदी में रिसर्च जर्नल विज्ञान प्रकाश की विशेषताएं

हिन्दी में रिसर्च जर्नल विज्ञान प्रकाश (www.vigyanprakash.in) के बारे में संक्षेप में बताना चाहूंगा कि यह इकलौता हिन्दी में विज्ञान रिसर्च जर्नल गुणवत्ता पूर्ण है, UGC-CARE की मान्य लिस्ट में शामिल है। सभी रिसर्च पेपर कम से कम तीन विशेषज्ञों के द्वारा समीक्षित होते हैं। इसके बाद भाषायी दृष्टि से भी समीक्षा, विशेषज्ञ सम्पादक करते हैं। पारदर्शिता की दृष्टि से सभी रिव्यू विशेषज्ञों (समीक्षकों) के नाम, पता और ईमेल भी उसी अंक में प्रकाशित किए जाते हैं। पेपर का शीर्षक (Title) और सारांश (Abstract) हिंदी और अंग्रेजी में दिए जाते हैं। लेखकों के नाम पते और ईमेल भी दिए जाते हैं इच्छुक पाठक ईमेल से उन्हें कभी भी संपर्क कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक शोध पत्र को DOI (Digital Object Identifier) नंबर देने की भी व्यवस्था है। प्रायः लेखक प्रकाशित शोध पत्र को रिसर्चगेट (ResearchGate) में भी अपलोड करते

हैं। उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, हरियाणा के तकनीकी विश्वविद्यालयों से अधिक से अधिक शोध पत्र मिलने की अपेक्षा है। इसके साथ इन विश्वविद्यालयों में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विज्ञान संगोष्ठियों के आयोजन के लिए भी प्रयास किए जाएं।

विज्ञान प्रकाश रिसर्च जर्नल (www.VigyanPrakash.in) का प्रकाशन वर्ष 2016 से हो रहा है। वर्ष 2019 में UGC-CARE की लिस्ट में शामिल किए जाने के बाद अब इसका त्रैमासिक प्रकाशन हो रहा है। इसके अतिरिक्त विज्ञान प्रकाश रिसर्च चैनल के साथ अंर्तराष्ट्रीय संगोष्ठियों का भी आयोजन हो रहा है। 2017 में NIT कुरुक्षेत्र, 2022 में ट्रिपलआईटी (IIIT) पुणे में और 2023 में सरदार पटेल नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (SVNIT) सूरत में आयोजित किए गए हैं आशा है यह श्रृंखला चलती रहेगी, कई संस्थाएं और विश्वविद्यालय इस दिशा में पहल करेंगे। यह NEP 2020 के अनुरूप भी है।

हिंदी में तकनीकी सम्मेलनों के आयोजन से उद्यमिता में बढ़ोतरी की संभावना है। अपेक्षा है कि इन सम्मेलनों में सामाजिक, आर्थिक व तकनीकी उद्यमियों को अधिक से अधिक भाग लेने के अवसर मिले। शिक्षा, स्वास्थ्य, लघु उद्योगों में नवाचार की बहुत संभावनाएं हैं। संगीत, नाटक, नृत्य, चित्रकला के सन्दर्भ में समग्र मानविकी की संभावनाएं हैं।

आशा है कि प्रमुख प्रतिष्ठित संस्थानों जैसे भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IITs), भारतीय प्रबंध संस्थान (IIMs), भारतीय विज्ञान शिक्षा और अनुसन्धान संस्थान (IISERs), भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc), वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसन्धान परिषद् (CSIR) भी हिंदी तकनीकी सम्मेलनों अथवा संगोष्ठियों का आयोजन करें।

कृत्रिम बुद्धिमता (AI) ने कोडिंग की आवश्यकता बहुत हद तक कम कर दी है। विविध क्षेत्रों जैसे कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, छोटे– मझोले उद्योग आदि में एआई के विविध प्रयोग हैं। एआई से मानव बुद्धि विवर्धन की दिशा में शोध विकास कार्य किये जाने की आवश्यकता है। पालतू जीवों के प्रशिक्षण में भी एआई सहायक होगा।

गर्व का विषय है कि भारत ने कई आपद परिस्थितियों में समस्याओं का समाधान किया, और अन्य आकांक्षी देशों की भी मदद की। मूल मंत्र रहा वसुधैव कुटुम्बकम्। एक पृथ्वी एक परिवार एक भविष्य। आत्मनिर्भर विकसित भारत का संकल्प जन विज्ञान, जन अनुसंधान को जन जागरूकता एवं सामूहिक प्रयास से अल्प अवधि में साकार बनाना संभव है।

– ओम विकास

Dr.OmVikas@gmail.com

M: +91 98684 04129